Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:4.081
Volume-12, Issue-4, March-2019 www.researchguru.net

कवयित्रियों की कविता में मुक्ति का स्वर

डॉ. संजय बी. आसोदरिया
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,पटेल महिला आर्ट्स–कोमर्स कॉलेज, सरदार पटेल चोक, बस स्टेन्ड के पास, संपर्क सूत्रः 9586505380 ऊँझा (गुज.), जिला –महेसाना –384170 ईमेल : sasodariya@gmail.com

शोध सारांश – वस्तुतः यह कविताएँ पुरुष बनाम स्त्री की मुक्ति का यथार्थ दस्तावेज़ हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र में सांप्रत कवयित्रियों द्वारा नारी की पीड़ा, शोषण, दासता, अत्याचार और रूढ़ीगत मूल्यों से मुक्ति की बात कही गई हैं। वह दूसरों के लिए चर्चा का विषय बनना नहीं चाहती, बल्कि खुद चर्चा करना चाहती है। वह दमघोंटू नहीं वरन, दमदार बनना चाहती है। कविताओं में दर्ज नारी मुक्ति की गुंज वर्तमान कविता की प्रासंगिकता को सिद्ध करती है और बताती है कि पुरुष वर्चस्ववादी समय के विरूद्ध नारी का सशक्त एवं रचनात्मक अभियान है। इस शोध–पत्र के द्वारा स्त्री मुक्ति की आवाज़ को रेखांकित करना हमारा प्रधान उद्देश्य है।

कुंजी शब्द – नारी मुक्ति, आज़ादी, रूढ़ीगत मूल्यों का विरोध, पुरुष समानता, जागृति।

'मुक्ति' पर कुछ भी चर्चा करने से पहले यह जान लेना जरूरी है कि 'मुक्ति' से मेरा क्या विचार है ? प्रस्तुत आलेख में उल्लेखित मुक्ति का स्वर, अर्थात् यहाँ 'मुक्ति' का अर्थ मानव मोक्ष से संबंधित नहीं है, परंतु नारी की पीड़ा, शोषण, दासता, अत्याचार और रूढ़ीगत मूल्यों से मुक्ति की बात हैं। संस्कृत में एक सुक्ति है 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् जो मुक्ति दिलाये वह विद्या। हमारे समाज में स्त्री शिक्षा का प्रचलन कुछ दशकों से ही शुरू हुआ है। इससे पहले स्त्री शिक्षा वर्जित मानी जाती थी। इसका अर्थ यह हुआ कि जब तक स्त्री शिक्षित नहीं होगी, तब तक उसकी मुक्ति संभव नहीं थी। यहीं वह बात है कि सदियों तक नारी को पुरुष की गुलामी करनी पड़ी, परंतु पिछले कई दशकों से स्त्री शिक्षा पर जोर दिया जाने लगा है। लड़कियाँ विद्यालय और महाविद्यालयों तक की पढ़ाई करने लगी हैं। उनके बौद्धिक विकास ने पैरों की बेड़ियों को उखाड़ फेका है। आज वह पुरुषों की बराबरी करते हुए, विविध क्षेत्रों में अपनी क्षमता का परिचय दे रही है। उनके जोश एवं जज़्बे को देखकर लगता है कि वह सफलता के उत्कर्ष पर पहुँच कर ही रूकेंगी।

कविताओं में दर्ज नारी मुक्ति की गुंज वर्तमान कविता की प्रासंगिकता को सिद्ध करती है और बताती है कि पुरुष वर्चस्ववादी समय के विरूद्ध नारी का सशक्त एवं रचनात्मक अभियान है। सांप्रत कवयित्री नारी को जगाती है, उठकर संघर्ष करने की प्रेरणा देती है और नारी अस्मिता को जगाने के लिए कविता में चमकते–दमकते शब्दों का प्रयोग भी करती हैं। समकालीन कवयित्रियों द्वारा रचित स्त्री कविता में नारी मुक्ति का स्वर मुख्य रूप से उभरकर आया है। इनके विचारानुसार स्त्री की पीड़ा को केवल स्त्री ही भोगती है, झेलती है, अतः स्त्री

पीड़ा की मौलिक अभिव्यक्ति केवल महिला लेखन में ही संभव है। पुरुषों के लिए स्त्री पीड़ा का अनुमान है, परंतु स्त्री के लिए वह अनुभव है, जिसे वह अपने 'स्व' पर जीती है। कयित्रियों ने अपने अनुभवों के आधार पर मुक्ति के स्वर को बुलन्द आवाज़ में व्यक्त किया है। इस क्षेत्र में निर्मला गर्ग, कात्यायनी, इन्दु जैन, गगन गिल, अनामिका, मोना गुलाटी, सुशीला टांकभौरे, सुनीता जैन, स्नेहमय चौधरी, सविता सिंह, रंजना जायसवाल, सुधा अरोडा, नीलेश रघुवंशी, वंदना मिश्र, प्रज्ञा पाण्डे आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

वंदना मिश्र ने नारी की स्थिति को लेकर अनेक सवाल उठाये हैं। हर युग में स्त्री को जिन्दा लाश में परिवर्तित करने की कोशिश होती रही है। इसलिए कवयित्रियाँ स्त्रियों को जागृत करने का प्रयास करती हैं। वे स्त्रियों को पुरुष के पंजों से आज़ाद होने का आह्वान करती है। कोई मुक्ति तुम्हें नहीं देगा, बल्कि अपनी मुक्ति तुम्हें स्वयं तलाशनी होगी। अतः जागो और मुक्ति के लिए प्रयास करों।

''माया जंगलों में/उलझी रहोगी कब तक
नहीं अब और नहीं/कहती रहोगी कब तक
सही समय आने की/देखोगी राह कब तक
तिनके की सहारे की/जोहोगी बाट कब तक
उठो अब कर डालो/जो भी करना चाहो
कहेगा कौन क्या/कहेगा कब तक।'' [1]

'स्त्री विमर्श' कविता में नीलेश रघुवंशी स्त्री मुक्ति का नारा बुलंद आवाज़ में करती है। आज की कवयित्री ने स्त्रियों को जड़ बना देने वाले षड्यंत्रों से ऊपर उठने और स्वयं का उद्धारक बनने का हौसला दिया है। नीलेश रघुवंशी पूरे स्त्री समाज को स्वावलंबन एवं आत्मविश्वास का मार्ग तलाश ने का आह्वान करती है। इन्हें स्त्री विमर्श, स्त्री चर्चा, स्त्री लेखन आदि कोरी बातों में जरा भी विश्वास नहीं हैं। वह इसका विरोद्ध करती है और ठोस काम के लिए आह्वान करती है –

मिल जानी चाहिए अब मुक्ति स्त्रियों को,
आखिर कब तक विमर्श में रहेगी
मुक्ति बननी चाहिए एक सड़क
चले जिस पर स्त्रियाँ ही। [2]

सविता सिंह इस दौर की एक ताकतवर कवयित्री है। इनकी कविता स्त्री मुक्ति का नया संदर्भ प्रस्तुत करती है। उनकी 'मैं किसकी औरत हूँ' नामक कविता में मुक्ति की कामना

तीव्रता के साथ व्यक्त हुई है। आज की स्त्री अपनी अस्मिता और गौरव की सुरक्षा हेतु पुरुषों को चुनौती देते हुए कहती है –

मैं किसी की औरत नहीं हूँ/मैं अपनी औरत हूँ/
अपना खाती हूँ/मैं किसी की मार नहीं सहती/
और मेरा परमेश्वर कोई नहीं।

आज की नारी के पास खोने के लिए पूरानी पुरुष सत्ता केन्द्रित जीवन पद्धति है, तो पाने के लिए सारा जहाँ है। कात्यायनी के अनुसार जीवन की पीड़ा का समाधान मौत नहीं है। मौत का वरण करने की अपेक्षा संघर्ष की ओर उन्मुख होना चाहिए, क्योंकि मौत की दया पर जीवित रहने की अपेक्षा ज़िन्दा रहने हेतु संघर्ष करना उपयुक्त है।

मौत की दया पर/जीने से/बेहतर है/
ज़िन्दा रहने की ख्वाहिश/के हाथों मारा जाना। [3]

कंचन शर्मा के अनुसार नारी को शोशण युक्त जीवन चक्र में घूमाना पुरुष समाज की खूबी है। निरंतर शोषण चक्र में पीसती नारी को थोड़ी–सी मुक्ति चाहिए। वह अपनी आज़ादी की माँग को लेकर पुरुषों से सवाल करती हुई लिखती है –

शब्दों के रिश्ते पहनाकर,/एहसास के सांकल से
कर लिया कैद तुमने मुझे/जवानी चौके का स्वाद
ज्ज़बात चूल्हें की आग बन गई,/सिंदूर तिलकित भाल–जाने कब?
कर गई खोखला मेरा वजूद।/समाज तुम्हारा है,/
दोगे मुझे/मुठ्ठी भर आज़ादी।'' [4]

कात्यायनी अपने पहले काव्य संग्रह 'सात भाइयों के बीच चम्पा' के माध्यम से हिन्दी में पूर्ण रूप से स्थापित हो जाती है। इनकी 'इस स्त्री से डरो' कविता स्त्रीत्व की कहानी कहती है – यह स्त्री, सबकुछ जानती है,/पिंजरे के बारे में, जाल के बारे में/

यंत्रणा, ग्रहों के बारे में /रहस्यमय हैं इस स्त्री की उलटबासियाँ/
इन्हें समझो/इस स्त्री से डरो।

सदियों से हम अनुभव करते आये हैं कि नारी पुरुष की इच्छापूर्ति का साधन मात्र है। उनके खाने–पीने, सजने–सँवारने से लेकर घूमने–फिरने आदि पर भी पुरुषों की मरजी चलती है। चुटकी भर सिंदूर और मंगलसूत्र नारी को सुरक्षा प्रदान करता है। कवयित्री कंचन शर्मा नारी मन में बैठे असुरक्षाबोध के गुब्बारे को फोड़कर उसके दिलो–दिमाग से डर को हटा देना चाहती है। वे मुक्ति के स्वर को शब्दबद्ध करते हुए लिखती है –

''लाल जोड़ा, लाल सिंदूर/लाल चूड़ी, कबतक/
लाल लहू के ये ठंड़े /पर्यायवाची शब्द/
इन शब्दों की जकड़नों से/मैं मुक्ति चाहती हूँ।'' [5]

समकालीन कविता की प्रमुख हस्ताक्षर अनामिका नारी को दुर्गा बनाना चाहती है। ऐसी दुर्गा जो अन्याय और अत्याचार के खिलाफ आवाज़ उठा सके, इससे लड़ सके। इसमें कोई संदेह नहीं रह गया कि आज की नारी शक्ति पुँज है। वह लात, घुँसा या गालियाँ नहीं खाती, बल्कि हर समस्या का समाधान ढूँढ़ती, हर बाधा को पार करती हुई निरंतर नई उचाइयाँ छू रही है।

आज की नारी बँधुआ मज़दूर नहीं रह गई कि पुरुष उसे यंत्र की तरह अपनी मरजी हो उपयोग करे, काम करवाये। अब नारी मुक्ति या स्वतंत्रता महज एक कल्पना नहीं रही। इन्दु जैन नारी को खुली हवा में साँस लेने हेतु जगाते हुए लिखती है –

सबसे पहले आँख खोलों/फिर मुठ्ठियाँ
फिर पैर/फिर उठो/फिर चिटकनी खोलो
न रात से डरो/न ठंड से
न पसीजें पैरों लड़खड़ाने से/न बाहर खड़े से
न भीतर सोये से/फेंक दो अपने को
कूद पड़ो/ट्रेन तभी रुकेगी
जब खुले दरवाजे की/हरी झंड़ी उसे दिखेगी।'' [6]

नारी के प्रति कवयित्री अधिक आशावान, उदार एवं संवेदनशील है। समाज के सुखद भविष्य के लिए वह नारी के सशक्तिकरण पर अधिक बल देती है। उनका विश्वास है कि वर्तमान समाज के दोहरे मापदण्ड को नारी ही अपने विप्लवी दुर्गा रूप से बदल सकती है। स्त्री सशक्तिकरण के इस दौर में उभरती कवयित्री डॉ. पूर्णिमा केडिया 'अन्नपूर्णा' इसी जज़्बे को व्यक्त करती हुई लिखती है –

'तू स्वयं ही अपने पंख निकाल/बन स्वयं ही सूत्रधार
फिर जमीं होगी तुम्हारी और आसमान भी।' [7]

इसमें कोई शक नहीं कि केवल वह महिला लेखिका या पाठिका नारी अस्तित्व की स्वतंत्रता, अस्मिता के लिए संघर्ष करती है, जिसमें अपने समाज की मुख्य प्रभुत्वशाली संस्कृति के अंतर्विरोधों का ज्ञान हो एवं नारी की पराधिनता और मुक्ति के लिए संघर्ष की आंकाक्षा भी हो।

''मिल जानी चाहिए अब मुक्ति स्त्रियों को
आखिर कब तक विमर्श में रहेगी मुक्ति
बननी चाहिए एक सड़क, चले जिस पर सिर्फ स्त्रियाँ ही
मेले और हाट बाज़ार भी अलग
किताबें अलग–अलग हों गाथाएँ इतिहास।'' [8]

निष्कर्ष रूप में, समकालीन कवयित्रियों द्वारा जिस प्रकार से स्त्री मुक्ति पर कविताएँ लिखी जा रही है, वह इतनी सशक्त, आक्रमक, क्रान्तिकारी एवं चेतना संपन्न है कि इससे स्त्री समाज में मुक्ति की लहर विकसित होगी, जो उसे सुरक्षा, साहस, आत्मसम्मान प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो सकेगी।

स्त्री की भावुकता उसे सबल नहीं दुर्बल बना रही है। नारी को ज्ञात होना चाहिए कि मनुष्य होना दुर्बलता से मुक्ति है। चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। यह मुक्ति बौद्धिक चेतना से ही सम्भव है। सांप्रत कवयित्री, इस दुनिया के सामने सच को उजागर कर स्त्री की स्वतंत्रता और उसकी मुक्ति का आख्यान रच रही है। समाज और परिवार में झूठी मर्यादाओं के दबाव तले जी रही स्त्री ने बीसवीं शताब्दी के उत्तराद्ध से अपनी चुप्पी तोड़कर दहाड़ना शुरू किया है। आज वह दहाड़ ही नहीं रही, बल्कि अपनी उपस्थिति भी दर्ज करवा रही है। निडर रंजना जायसवाल ही कह सकती हैं –''बहनों, बारिश हो रही है। आज़ादी की बारिश। आओ, मेरे साथ खुलकर भीगो–नहाओं और बिगड़ो। अंदर उमस में घुट–घुटकर मरने और अच्छा कहलाने के भ्रम में 'निर्मला' की तरह कुर्बान होने से बेहतर है यह बिगड़ना।'' [9]

इस प्रकार हम अनुभव करने लगे हैं कि सशक्त शंखनाद करतीं ये रचनाएँ नारी उर्जा के उदाहरण है और पुरुष प्रधान समाज को कड़ा संदेश देती है। स्त्री मुक्ति के इस विराट स्वप्न को पूरा करने के लिए परिदृश्य में उतर कर आई है कुछ जाँबाज लेखिकाएँ जिन्होंने समाज में दबी, कुचली, असंवेदनशील मान्ताओं को चकनाचूर कर एक नवीन मान्यता का शिलान्यास किया है। परिणामस्वरूप सांप्रत स्त्रियों में क्रान्ति की ज्वाला जल चुकी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस कवयित्री की कवितायें बचकानी नहीं, बल्कि बेहद सतर्क एवं चौकनी हैं। वह अपने कर्म के प्रति लीन एवं आस्थावान है। वह इस आस्था के साथ स्त्री मुक्ति को तब तक वाचा देती रहेंगी जब तक कि अधिकांश स्त्री स्वावलंबी तथा आत्मनिर्भर होकर पुरुषों के बराबर न हो जाए।

संदर्भ सूची :–

1. कब तक (वे फिर आये हैं), मिश्र वंदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2011, पृ. 72–73
2. समकालीन साहित्य समाचार, फरवरी 2004, पृ. 11

3. बेहतर है (सात भाइयों के बीच चम्पा), कात्यायनी, परिकल्पना प्रकाशन, लखनऊ, सं. 2008, पृ. 44

4. तनी रीढ़ (तालाब में कंकड), डॉ. कंचन शर्मा, सहयोगी प्रकाशन, दुर्गापुर, वर्धमान, सं. 2008, पृ. 72

5. तनी रीढ़ (तालाब में कंकड), डॉ. कंचन शर्मा, सहयोगी प्रकाशन, दुर्गापुर, वर्धमान, सं. 2008, पृ. 72

6. जागता सपना (यहाँ कुछ हुआ तो था), जैन इन्दु भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1994, पृ. 62

7. लूटा लूटा सा चाँद (संग्रह), डॉ. केडिया पूर्णिमा, पृ. 62

8. भारत में स्त्री असमानता : एक विमर्श, डॉ. जोशी गोपा, पृ. 263

9. समीक्षा, अक्टूबर–दिसम्बर, 2011, पृ. 33